ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 73-74
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

पर्यावरण के दायरे में कृषि विकास एक अध्ययन

डॉ0 सुरेन्द्र कुमार

सहायक आचार्य– श्री लुम्बाराम मेमोरियल कॉलेज लोहावत, जोधपर (राजस्थान), भारत

Received-15.07.2023, Revised-21.07.2023, Accepted-26.07.2023 E-mail: aaryvart2013@gmal.com

***सारांशः** "प्राकृतिक पर्यावरण में भूमि प्रयोग एक तात्कालिक प्रक्रिया है, जबकि भूमि उपयोग मानवीय इच्छाओं के अनुरूप अपनाई गई दीर्घकालिक प्रक्रिया है।" स्पष्टतः भूमि प्रयोग तथा भूमि उपयोग में सूक्ष्म अंतर है। दोनों शब्द दो भिन्न–भिन्न परिस्थितियों के सूचक हैं। प्रयोग शब्द संरक्षण तथा उपयोग शब्द व्यावहारिक संदर्भ में प्रयुक्त होता है। "भूमि प्रयोग केवल वनस्पति आवरण के संदर्भ में ही नहीं अपितु मानवीय क्रियाओं पर आधारित उपयोगी सुधारों के रूप में भी प्रयुक्त होना चाहिए। "भूमि उपयोग प्राकृतिक व सांस्कृतिक दोनों की अभिव्यक्ति होता है।*

कुंजीभूत शब्द– प्राकृतिक पर्यावरण, तात्कालिक प्रक्रिया,दीर्घकालिक प्रक्रिया, शब्द संरक्षण, व्यावहारिक संदर्भ, वनस्पति आवरण ।

विन्क के अनुसार "भूमि उपयोग की सकल्पना को प्रायः सापेक्षिक स्थिर विषय समझना चाहिए, जिसका सम्बन्ध एक निश्चित प्रदेश में निश्चित भूमि के प्रयोग से होता है। यह उपलब्ध संसाधनों व मानवीय आवश्यकताओं के मध्य जनित अनवरत तनाव का परिणाम है जो मानवीय प्रयत्नों द्वारा किया जाता है।

आर. बारलो के अनुसार, "भूमि ससाधन उपयोग, भूमि समस्या एवं उसके नियोजन की विवेचना की धूरी हैं, जिससे अध्ययन के लिए उन्होंने निम्नांकित 5 महत्वपूर्ण षष्टिकोण बताए हैं। –

1. आर्थिक दृष्टि से समृद्ध समाज का निर्माण।
2. भूमि संसाधन उपयोग की आवश्यकता तथा उसके अनुकूलतम उपयोग का निर्धारण।
3. विभिन्न लागत कारकों (जैसे पूंजी, श्रम आदि) के अनुपात में भूमि से अधिकतम लाभ प्राप्त करने की योजना ।
4. फसलगत भूमि के उपयोग में मांग के आधार पर लाभदायक सामंजस्य तथा परिवर्तन का सुझाव।
5. किसी सी क्षेत्र के लिए अनुकूलतम एव बहुद्देश्यी भूमि उपयोग की विवेचना करना तथा उसके सुझावों को क्षेत्रीय अंगीकरण हेतु समन्वित करना।

रौलेण्ड ने भूमि संसाधन उपयोग को आर्थिक शक्तियों का परिणाम बताया है। कृषि क्रिया किसी न किसी क्षेत्र पर की जाती है। इस क्षेत्र को सामान्यः धरातल, भूमि मृदा या धरती आदि के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। अतः कृषि क्षेत्र से आशय उस स्थान से लगाया जाता है, जहां .षि आजीविका कमाने हेतु खाधनों का उत्पादन करता है। कृषि क्रिया से पूर्व धरातल को वनभूमि, मरूभूमि, पर्वत, पठार, मैदान आदि के रूप में सम्बोधित किया जाता है। तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या को भोजन जुटाने के लिए वन भूमि अदृष्य क्षेत्रों को निरन्तर कृषि के अन्तर्गत लाया गया है। जिससे अदृष्य क्षेत्र में कमी हुई है। भूमि उपयोग के विश्लेषण में दूरी की विशेष भूमिका होती है। यह गुरूत्व शक्ति के समान है। दूरी से नगर रूप में भूमि उपयोग उसी तरह प्रभावित होती है जैसे दो वस्तुओं के मध्य दूरी कम होने पर उनमें आकर्षण अधिक होता है तथा दूरी बढ़ने पर आकर्षण दूरी के वर्ग के अनुपात में कम होता जाता है।

यह संकल्पना भूमि का प्रयोग करने वाले कृषक या उत्पादक के व्यवहार एवं परिस्थितियों से जुड़ी है। व्यवहार से आशय यह है कि कृषक भूमि से उत्पादन प्राप्त करने के सम्बन्ध में क्या निर्णय लेता है। निर्णय लेने की प्रक्रिया को अनेक सामाजिक व व्यक्तिगत परिस्थितियां भी प्रभावित करती हैं। कोई कृषक एक वर्ष में अपने खेत में एक फसल लेता है तो कोई दो या तीन फसलें उगाता है, कोई भैंस पालना पसंद करता है तो कोई भेड़, बकरी व गाय पालना आदि।

भूमि उपयोग अध्ययन में प्रत्यक्ष बोध तथा प्रतिमूर्ति अत्यंत जटिल संकल्पना है। निर्णय प्रक्रिया प्रत्यक्ष तथा प्रतिबिंब का ज्ञान से प्रभावित होती है। इसके आधार पर निर्णय वातावरण निर्धारित होता है। भूमि उपयोग संबंधी निर्णय में व्यक्ति स्वयं अपने अनुभव पर आधारित ज्ञान कथा साधनों द्वारा प्राप्त ज्ञान का प्रयोग करता है। कृषि का भूमि उपयोग संबंधी निर्णय प्रत्यक्ष ज्ञान से प्रभावित होता है खेत में फसल बोने से पूर्व फसल का निर्धारण संभावित मूल्यों के आधार पर तय कर लेता है।

कृषि भूमि उपयोग निर्णयन में भौतिक व मानवीय कारकों उच्चावच जलवायु, मिट्टी की उर्वरता, भू–स्वामित्व, खेत का आकार सरकारी नीति व कृषि कर, संस्कृति, प्राविधिकी, जीवन स्तर, विशेषीकरण, रीति–रिवाज, बाजार, दूरी, मांग, परिवहन, प्राप्यता, विश्वसनीयता, उत्पादन तकनीक, ज्ञान, विभिन्नता, कृषिगत इतिहास तथा उपभोक्ता व उसके स्तर आदि का प्रभाव पड़ता है।

पीटर हंगेट के अनुसार ''मानव में निर्णय लेने की प्रक्रिया न तो पूर्णतः तर्क संगत है, न ही पूर्णतः अव्यवस्थित है, बल्कि यह अवसर रूचि और परिकलन की सम्भाव्यता से सम्बन्धित सम्मिश्रण है''

भारत में कृषि भूमि उपयोग में। भूमि उपयोग अध्ययन का इतिहास 1938 से प्रारम्भ होता है जब एल डी स्टाम्प महोदय कलकत्ता में आयोजित भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 25 वें अधिवेशन में सम्मिलित हुए।

प्रस्तावित शोध के सोपान– कृषि क्रिया किसी न किसी क्षेत्र पर की जाती है। इस क्षेत्र को सामान्यः धरातल, भूमि मृदा या धरती आदि के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। अतः कृषि क्षेत्र से आशय उस स्थान से लगाया जाता है, जहां कृषि आजीविका कमाने हेतु खाधनों का उत्पादन करता है। कृषि क्रिया से पूर्व धरातल को वनभूमि, मरूभूमि, पर्वत, पठार, मैदान आदि के रूप में सम्बोधित किया जाता है। तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या को भोजन जुटाने के लिए वन भूमि च अदृष्य क्षेत्रों को निरन्तर दृषि के अन्तर्गत लाया

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

गया है। जिससे अदृष्य क्षेत्र में कमी हुई है। भूमि उपयोग के विश्लेषण में दूरी की. विशेष भूमिका होती है। यह गुरूत्व शक्ति के समान है। दूरी से नगर रूप में भूमि उपयोग उसी तरह प्रभावित होती है, जैसे दो वस्तुओं के मध्य दूरी कम होने पर उनमें आकर्षण अधिक होता है तथा दूरी बढ़ने पर आकर्षण दूरी के वर्ग के अनुपात में कम होता जाता है।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व– यह क्षेत्र कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला क्षेत्र है। इस क्षेत्र में पाये जाने वाले शस्य प्रतिरूप में मुद्रादायनी फसलों के साथ खाद्यान्नों का उत्पादन भी प्रचुर मात्रा में किया जाने लगा है। किसी भी क्षेत्र विशेष में होने वाले परिवर्तन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने समीपस्थ एवं दूरस्थ क्षेत्रों को अवश्य प्रभावित करते हैं।

इस प्रकार इस क्षेत्र में कृषिगत फसलों के उत्पादन के क्षेत्र में वृद्धि एवं कृषि विकास के परिवर्द्धन का हमारें देश के विकास में दूरगामी योगदान परिलक्षित होगा। इतना ही नहीं अपितु इसी तरह अन्य क्षेत्रों में भी कृषि विकास के फलस्वरूप आर्थिक विकास से व्यक्ति के जीवन स्तर में सुधार होगा, उसका समाजिक स्तर भी सुधरेगा एवं प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि होगी, जिसके परिणामस्वरूप होने वाले कार्यकलापों के माध्यम से राष्ट्र में विदेशी मुद्रा का विनिवेश बढ़ेगा जिससे यकीनन ही हमारा राष्ट्र उन्नति एवं विकास के प्रगतिपथ पर अग्रसर होगा। फसलों के उत्पादन में वृद्धि कृषिगत नवीन तकनीकों के समावेश का ही परिणाम है। जिसके फलस्वरूप इस क्षेत्र द्वारा उत्पादित विभिन्न श्रेणियों की फसलों से राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि होगी, जिसके माध्यम से हमारे यहाँ विदेशी मुद्रा का निवेश बढ़ेगा तथा इसके परिणामस्वरूप हमें औद्योगिक विकास के लिए नवीन तकनीकी साधन एवं सुविधायें उपलब्ध हो सकेंगी। यह सर्वदा सत्य है कि व्यक्ति के विकास से ही समाज व राष्ट्र का विकास संभव है। व्यक्ति के विभिन्न आयामों का विकास कृषिगत कार्यों से संबंद्ध हैं। व्यक्ति के द्वारा कृषि विकास के माध्यम से स्वयं का आर्थिक, समाजिक एवं सांस्कृतिक विकास संभव है। अर्थात् जब मनुष्य अपनी कृषि भूमि में फसलों का उत्पादन करता है और पर्यावरणीय परिस्थितियों व उसकी आर्थिक स्थिति दोनों अनुकूल होती है तो निश्चित रूप से ही वह आर्थिक उत्पादन प्राप्त कर सकेगा। अन्यथा उसे कम उत्पादन ही प्राप्त होगा। कभी–कभी प्रा.तिक पर्यावरण अनुकूल होने पर भी अच्छा उत्पादन प्राप्त नहीं होता। मनुष्य अपने विकास के माध्यम से अपने परिवार का, समाज का, राज्य का एवं सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य–

1. क्षेत्र के कृषि विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं वर्तमान में कृषि विकास का प्रारूप व भावी कृषि विकास का स्तरीय अध्ययन करना।
2. क्षेत्र में पाये जाने वाले वर्तमान कृषि स्वरूप एंव उसमें प्रयुक्त संसाधनों के मात्रात्मक एवं गुणात्मक पक्षों का अध्ययन करना।
3. क्षेत्र में कृषि विकास में उपयोग में लाई जाने वाली पद्धितियों, तकनीकों, रासायनिक और जैविक संसाधनों एंव पर्यावरणीय अन्तर्सबंध स्थापित करने के साथ पारिस्थितिक संतुलन का अध्ययन करना।
4. क्षेत्र के भौतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश तथा क्षेत्र में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं का कृषि विकास व समाजिक परिवेश में अध्ययन करना।
5. क्षेत्र में कृषि विकास को प्रभावित करने वाले भैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक कारकों का अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष– भूमि उपयोग अध्ययन में प्रत्यक्ष बोध तथा प्रतिमूर्ति अत्यंत जटिल संकल्पना है निर्णय प्रक्रिया प्रत्यक्ष तथा प्रतिबिंब का ज्ञान से प्रभावित होती है। इसके आधार पर निर्णय वातावरण निर्धारित होता है। भूमि उपयोग संबंधी निर्णय में व्यक्ति स्वयं अपने अनुभव पर आधारित ज्ञान कथा साधनों द्वारा प्राप्त ज्ञान का प्रयोग करता है। कृषि का भूमि उपयोग संबंधी निर्णय प्रत्यक्ष ज्ञान से प्रभावित होता है। खेत में फसल बोने से पूर्व फसल का निर्धारण संभावित मूल्यों के आधार पर तय कर लेता है।

कृषि भूमि उपयोग निर्णयन में भौतिक व मानवीय कारकों उच्चावच जलवायु, मिट्टी की उर्वरता, भू–स्वामित्व, खेत का आकार सरकारी नीति व कृषि कर, संस्कृति, प्राविधिकी, जीवन स्तर, विशेषीकरण, रीति–रिवाज, बाजार, दूरी, मांग, परिवहन, विश्वसनीयता, उत्पादन तकनीक,. ज्ञान, विभिन्नता, कृषिगत इतिहास तथा उपभोक्ता व उसके स्तर आदि का प्रभाव पड़ता है।

भारत में कृषि भूमि उपयोग में। भूमि उपयोग अध्ययन का इतिहास 1938 से प्रारम्भ होता है, जब एल डी स्टाम्प महोदय कलकत्ता कत्ता में आयोजित भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 25 वें अधिवेशन में सम्मिलित हुए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ग्रेगरी, एस. (1971) "स्टेटिसटिकल मैथड्स एण्ड ज्योग्राफर" लंदन, मैथ्यूम।
2. ग्रिग, डी.बी. (1975) "पोपूलेशन प्रेशर एण्ड एग्रीकल्चर चेन्ज"।
3. गुर्जर, आर.एस. (2000) "एग्रीकल्चर इकोलॉजी ऑफ शेखावाटी" पी.एच.डी. थीसिस, यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान।
4. हारून, मोहम्मद (2004) "आर्थिक भूगोल के मूल तत्व"।
5. तिवाड़ी, पी.एस. (1970) "एन एग्रीकल्चरल एटलस ऑफ उत्तर प्रदेश"।
6. थॉम्पसन,एफ.एम.एल. (1968) "द सैकण्ड रिवोल्यूशन इन एग्रीकल्चर, इकानॉमिक हिस्ट्री रिव्यू 21"ण

*****